ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 164-165

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

रुक्मिणी मंगल काव्य

नवनीता दास

शोधा अध्यात्री– पी0एच0– डी0, हिंदी विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी–नदिया (पश्चिम बंगाल), भारत

Received-11.05.2023, Revised-17.05.2023, Accepted-21.05.2023 E-mail: navd24@gmail.com

सारांशः ***गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर– "भक्ति रस का काव्य तो भारतवर्ष के प्रत्येक साहित्य में किसी न किसी कोठी में पाया जाता है परंतु राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य का निर्माण किया उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं पाया जाता और उसका कारण है, राजस्थानी कवियों ने कठिन सत्य के बीच में रहकर युद्ध के नगाड़ों के बीच अपनी कविताएं बनाई थी। प्रकृति का तांडव रूप उनके सामने था। क्या आज कोई कवि केवल अपनी भावुकता के बल पर फिर उस काव्य का निर्माण कर सकता है? राजस्थानी भाषाके साहित्य में जो एक भाव है, जो एक उद्वेग है, वह केवल राजस्थान के लिए ही नहीं, सारे भारतवर्ष के लिए गौरव की वस्तु है। मुझे क्षिति मोहन सेन महाशय से हिंदी काव्य का आभास मिला था पर आज जो मैंने पाया है वह बिल्कुल नवीन वस्तु है। आज मुझे साहित्य का एक मार्ग मिला है"।***

कुंजीभूत शब्द– साहित्य, कठिन सत्य, तांडव रूप, भावुकता, गौरव, रुक्मिणीमंगल काव्य, व्यस्त जीवन, सारंगी, करताल, गायक।

भारतीय भाषाओं में रुक्मणी की कथा को लेकर अनेक काव्य लिखे गए। जिनकी भाषा मुख्यतः राजस्थानी और ब्रज है। कवियों ने कृष्ण और रुक्मणी के विवाह प्रसंग को लेकर रुक्मणी मंगल, रुक्मणी हरण, रुकमणी परिणय, कृष्ण रुक्मणी री वेलि स्याम सनेही आदि बहुत से नामों से अपनी रचनाएं लिखी हैं। राजस्थान में रुक्मिणीमंगल काव्य ने लोक कंठ पर बहुत बड़ा अधिकार रखा है राजस्थानी जनता इस काव्य को बड़ी रुचि से गाती और सुनती आई है, आज भी इस व्यस्त जीवन में कभी कभी कहीं कहीं लोग रुक्मिणी मंगल काव्य की रस माधुरी का आनंद लेते दिखाई पड़ते हैं। जिस प्रकार श्रीमद् भागवत महापुराण के विधि पूर्वक वाचन–श्रवण का एक सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है उसी प्रकार रुक्मिणी मंगल का भी आयोजन होता है। इसके लिए पूरी मंडली होती है, जिसके एक प्रधान गायक होते हैं, मंडली के इतर लोगों में कोई ढोलक बजाता है, कोई मंजीरे, कोई सारंगी तो कोई करताल यह लोग प्रमुख गायक के गाने में भी सहयोग देते हैं। श्रद्धालु बड़ी ही भक्ति भाव के साथ इस गायन का आनंद लेते हैं। कथा की समाप्ति पर नित्य ही और विशेषतः अंतिम दिन जनता अपनी श्रद्धा के अनुसार अन्न, वस्त्र और धन आदि का चढ़ावा चढ़ाती है तथा दूसरे दिन गायको को भोजन कराया जाता है। ऐसी मान्यता है कि रुक्मिणी मंगल की पुनीत कथा का पाठ करने अथवा सुनने से ना केवल यमत्रास ही मिट जाता है बल्कि हरिचरणारविंद के समीप पाठकर्ताओं तथा श्रोताओं को स्थान भी मिल जाता है –

"रुकमणी हरन पुनीत चित दै सुनैं सुनावैं।
जाहि मिटै जम त्रास,बास हरि के पद पावै ।।"

रुक्मिणी मंगल के पाठ का एक और कारण यह भी है कि ऐसा लोग विश्वास है इसके पाठक हरि को भा जाते हैं और जो हरि को भा जाता है वह सबको भा जाता है –

"जो यह मंगल गाय चित्र दै सुनै सुनावै ।
सो सब मंगल पावै हरिरुक्मिणी मन भावै।।
हरि रुक्मिणी मन भावै सो सबके मन भावै।
नंददास अपने प्रभु कौ नित मंगल गावै ।।"

हिंदी में प्रचलित मंगल काव्य मूलतः पुराण प्रचलित कथाओं पर आधारित है, जैसा कि रुक्मणी मंगल काव्य इसमें कृष्ण –रुक्मिणी के विवाह के प्रसंग का वर्णन किया गया है कृष्ण और रुक्मणी के विवाह का वर्णन विष्णु पुराण में सर्वप्रथम आया है, इसके उपरांत भागवत के दशम स्कंध में कृष्ण और रुक्मणी के विवाह का वर्णन हमें देखने को मिलता है इससे यह सिद्ध हो जाता है की कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का आधार विष्णु पुराण श्रीमद् भागवत आदि है। कवियों ने कृष्ण और रुक्मिणी के विवाह प्रसंग को रुक्मिणीमंगल, रुक्मिणी परिणय, कृष्ण रुक्मणी री वेलि, स्याम सनेही आदि बहुत से नामों से लिखा है।

रुक्मिणी मंगल की कथावस्तु– कथा का आधार भागवत पुराण है जिसमें श्री कृष्ण द्वारा रुक्मणी हरण प्रसंग प्रमुख है, विदर्भ देश में भीष्मक नामक एक परम तेजस्वी और सद्गुणी राजा राज्य करते थे। कुण्डिनपुर में उनकी राजधानी थी, उनके पांच पुत्र रुक्मकुमार, रुक्मरथ, रुक्मबाहु, रुक्मकेश, और रुक्ममाली थे, उनकी एक पुत्री रुक्मिणी थी। उसमें लक्ष्मी के समान ही दिव्य लक्षण थे अतः लोग उसे लक्ष्मी स्वरूपा कहा करते थे रुक्मिणी जब विवाह योग्य हो गई तो पिता भीष्मक को उसके विवाह की चिंता हुई, रुक्मिणी ने श्री कृष्ण के रूप और गुण के विषय में सुन रखा था और मन ही मन श्री कृष्ण को अपना पति मान बैठी थी, परंतु उसके श्री कृष्ण से विवाह मैं एक कठिनाई यह थी कि पिता और भाई का संबंध जरासंध, कंस और शिशुपाल से था, इस कारण वह श्री कृष्ण से रुक्मिणी का विवाह नहीं करवाना चाहते थे। राजनैतिक संबंधों को ध्यान में रखते हुए रुक्मणी का विवाह शिशुपाल से तय कर दिया गया, यह जानकर रुक्मिणी विचलित हो जाती है और विप्र (ब्राह्मण) के हाथ श्री.ष्ण को संदेशा भेजती है।

"बलि के बंधनहार! सुनु, तो तें और जु मोहि।
व्याहै तो जानो यहै स्यार सिंघ–मख जोहि।।"

रुक्मिणी का पत्र पाकर श्री कृष्ण आनंद जनित सात्विक भाव से उमड़ पढ़ते हैं, सेना को साथ ले जाने में विलंब होगा जानकर

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

अकेले ही पद दर्शक सारथी को लेकर कुण्डिनपुर को चल देते हैं–

'धनुख–बान लै हाथ, सारथि रथ बसारि कै
अरथ सुनयो जदुनाथ, द्विज वर भेदू पंथ को'

पत्र में रुक्मिणी ने कृष्ण को देवी के मंदिर में आने के लिए लिखा था इसलिए रुक्मणी ने मंदिर (माता अंबिका दर्शन) को जाने की तैयारी की सखी को पहले ही सिखा रखी थी, माता की आज्ञा प्राप्त की, कृष्ण मिलन के उत्साह में श्रृंगार किया, फिर सखियों के साथ पालकी में चढ़कर मंदिर को चली साथ चली चतुरंगिणी सेना।

इधर श्री कृष्ण मंदिर के द्वार पर रथ को लेकर पहुंच जाते हैं और सेना के बीच से रुक्मिणीका हरण करते हैं। कृष्ण ने हाथ पकड़ कर उसे रथ में बैठा लिया और तुरंत रथ को हांक दिया,जाते समय पुकार कर कह गए–

'कर करि कर– वर रुकमणी बैठारी रथ माह
दौरो रे दौरो, कहो, हरे जात हरि नाह स'

शिशुपाल विवाह के लिए तैयार हो रहे थे जब उन्हें यह ज्ञात हुआ, तो वे विवाह के वस्त्र बदलकर युद्ध के उपयुक्त वस्त्र और कवच पहन कर श्री कृष्ण से युद्ध करने के लिए उनका पीछा करते हैं। शिशुपाल और श्री कृष्ण के बीच बड़ा भयंकर युद्ध होता है कवि ने इस प्रसंग में अलंकारिक प्रभावों के द्वारा वर्षा काल का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है–

'मेघ घटा यो दोउ कटक भय सामूहे आइ
रुधिर नदी वहि है, समुझी जोगिनी आयी धाई'

शिशुपाल को पराजित देखकर रुक्म कुमार कृष्ण का पीछा करते हैं और एक तिरछे मार्ग से चलकर रास्ता रोककर खड़े हो जाते हैं श्रीकृष्ण को युद्ध के लिए ललकारते हैं–

'अरे अहीर! इस बेचारी बाला को लेकर तू बहुत दूर चला आया है अब मैं आ पहुंचा हूं, ठहर जा।'

रूक्म कुमार की ललकार से श्री कृष्ण क्रुद्ध हो उठते हैं, धनुष पर बाण चढ़ा लेते हैं पर छोड़ते नहीं। रुक्मिणीपास बैठी है उसके भाई को लक्ष्य कैसे बनाया जाए? प्रिया के हृदय की बात वे बिना बताए जान लेते हैं। श्री कृष्ण केवल रुक्म कुमार के चलाए अस्त्रों को व्यर्थ करते जाते हैं। अंत में रुक्म कुमार को पकड़ लेते हैं और उसके केश उतार कर उसे विरुप कर देते हैं।

शास्त्रों में कहा गया है– **'वपनं श्मश्रु–केशानां वैरुप्यं सुहृदो वधः'**

अर्थात् दाढ़ी–मूछ और सिर के केशो को मूंड कर विरूप कर देना ही सूहज्जन का वध करना है।

इस प्रकार कथा के अंत में श्री कृष्ण की विजय और विरोधियों की पराजय होती है, कृष्ण –रुक्मिणी को लेकर द्वारका जाते हैं जहां विधिवत उनका विवाह होता है और फिर दोनों का मिलन होता है। काव्य की समाप्ति पुत्र–पौत्र आदि की प्राप्ति होने पर होती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दीक्षित आनंद प्रकाश,वेली क्रिसन रुकमनी री राठोरराज प्रिथीराज री कही, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम प्रकाशन 1998ई,पृ.१००.
2. दीक्षित आनंद प्रकाश, वेली क्रिसन रुकमनी री राठोरराज प्रिथीराज री कही, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम प्रकाशन 1998ई,पृ.१००.
3. स्वामी नरोत्तमदास, क्रिसन रुकमणी री वेली राठौर पृथ्वीराज री कही, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, तृतीय संस्करण 2013, पृष्ठ 172.
4. स्वामी नरोत्तमदास, क्रिसन रुकमणी री वेली राठौर पृथ्वीराज री कही, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, तृतीय संस्करण 2013, पृष्ठ 173.
5. स्वामी नरोत्तमदास, क्रिसन रुकमणी री वेली राठौर पृथ्वीराज री कही, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, तृतीय संस्करण 2013, पृष्ठ 173.
6. स्वामी नरोत्तमदास, क्रिसन रुकमणी री वेली राठौर पृथ्वीराज री कही, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, तृतीय संस्करण 2013, पृष्ठ 173.

*****